अनुक्रमणिका

अ नु क्र म णि का

प्राक्कथन

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - गोविंद मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 1 - 15

प्रास्ताविक

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 माता-पिता

1.1.2 जन्म

1.1.3 शिक्षा

1.1.4 भाई-बहन

1.1.5 जाती, वंश और पूर्वज

1.1.6 व्यवसाय

1.1.7 साहित्य के प्रति आस्था और प्रथम लेखन

1.1.8 नौकरी

1.1.9 वैवाहिक जीवन

1.1.10 साहित्यकारों से संपर्क

1.2 कृतित्व

1.2.1 उपन्यास

1.2.2 कहानी संग्रह

1.2.3 यात्रा वृत्तांत

1.2.4 साहित्यिक निबंध

1.2.5 बालसाहित्य

1.2.6 कविता

1.2.7 अनुवाद

1.2.8 अन्य

1.2.9 गोविंद मिश्र पर आलोचनात्मक पुस्तकें

1.2.10 पुरस्कार एवं सम्मान

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - 'पाँच आँगनों वाला घर' का वस्तुगत अनुशीलन | पृष्ठ 16 - 33

प्रास्ताविक

2.1 'वस्तुगत' शब्द का अर्थ और विवेचन

2.2 'पाँच आँगनों वाला घर' में वस्तु विभाजन

2.2.1 कथावस्तु का आरंभ क्षेत्र (1940-50)

2.2.2 पिढ़ियों का विवरण

2.3 'पाँच आँगनों वाला घर' की संरचना

2.3.1 गणेशजी वाला आँगन

2.3.2 बेलवाला आँगन

2.3.3 कालीजी वाला आँगन

2.3.4 हनुमानजी वाला आँगन

2.3.5 फटकावा वाला आँगन

2.4 संयुक्त परिवार

2.5 पारिवारिक वातावरण

2.6 'पाँच आँगनों वाला घर' का खुशहाल जीवन

2.7 कथावस्तु का मध्य

2.7.1 पारिवारिक विघटन का कारण

2.7.2 टूटता हुआ परिवार

2.8 स्त्रियों की भूमिका

2.8.1 जोगेश्वरी

2.8.2 शांतिदेवी

2.8.3 रम्मो

2.8.4 ओमी

2.8.5 कमलाबाई

2.8.6 नईकी चाची

2.9 बुजुर्गों के प्रति आस्था/अनास्था

2.10 कथावस्तु का अंतिम हिस्सा (1980-90) 'अन्धी गली'

2.10.1 पारिवारिक भेद, नई पीढ़ी में बेबनाव

2.10.2 पाश्चात्यों का अनुकरण

2.11 संयुक्त परिवार का अंत

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - 'पाँच आँगनों वाला घर' के कथ्य का अनुशीलन **पृष्ठ 35 - 64**

प्रास्ताविक

3.1 कथ्य का परिचय और अर्थ

3.2 कथ्य का सामर्थ्य

3.2.1 आस्वाद परक संवेदना

3.2.2 मूल्यगत संवेदना

3.3

3.3.1 कथ्य की व्याप्ति

3.3.2 उपन्यास में कथ्य का बोध

3.3.3 चित्रात्मकता

3.4 कथ्य का विश्लेषण

3.4.1 प्रथम खण्ड

3.4.2 दृवितीय खण्ड

3.4.3 तृतीय खण्ड

3.4.4 संवेदनशीलता

3.4.5 प्रामाणिकता

3.4.6 संक्षिप्तता

3.5 प्रमुख कथ्य
 3.5.1 मोहभंग
 3.5.2 छटपटाती नैतिकता
 3.5.3 कथ्य की पूरकता
3.6 गौण कथ्य
 3.6.1 कथ्य की समग्रता
 3.6.2 सृजनशीलता
3.7 कथ्य में परिवेश
 3.7.1 प्राकृतिक परिवेश
 3.7.2 प्राकृतिक में गंगा घाट
 3.7.3 कथ्य का पारिवारिक परिवेश
 3.7.4 1857 का गदर
 3.7.5 जोगेश्वरी के मायके का वर्णन
 3.7.6 राजन का पारिवारिक परिवेश
 3.7.7 कथ्य में ऐतिहासिक परिवेश
3.8 कथ्य में संवाद
 3.8.1 जोगेश्वरी और राजन के संवाद
 3.8.2 बच्चों का बनारसी गीत
 3.8.3 दादी अम्मा के संवाद
 3.8.4 राधेलाल के प्रति परिवार वालों के भाव
 3.8.5 संवादों में आदर्श
 3.8.6 संवादों में राष्ट्रीय राजनीतिक जनचेतना के भाव
 3.8.7 माँ-बाप की जिम्मेदारियों से मुँह फेर लेना
निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - 'पाँच आँगनों वाला घर' का शिल्पगत अनुशीलन | पृष्ठ 65 - 99

❑ प्रास्ताविक

4.1 शिल्प का अर्थ

4.2 शिल्प का स्वरूप

4.3 शिल्प की परिभाषा

4.4 उपन्यास की शिल्पविधि

4.5 शिल्प के विविध अंग

4.5.1 भाषा

4.5.2 भाषा से संबंधित विविध रूप

4.5.2.1 तत्सम शब्द

4.5.2.2 तद्भव शब्द

4.5.2.3 आँचलिक शब्द

4.5.2.4 अँग्रेजी शब्द

4.5.2.5 विदेशी शब्द

4.5.2.6 मुहावरे

4.5.2.7 अलंकारिक वाक्यों का प्रयोग

4.5.2.8 लोकोक्तियाँ

4.5.2.9 सुभाषित

4.6 वस्तुशिल्प

4.7 चरित्र चित्रण

4.8 कथोपकथन

4.9 देशकाल और वातावरण

4.10 उद्देश्य

4.11 भाषा तथा शैली

4.12 विविध शैलियों का प्रयोग

4.12.1 वर्णनात्मक शैली

4.12.2 मनोविश्लेषणात्मक शैली

4.12.3 पूर्वदिप्ती शैली

4.12.4 ऐतिहासिक शैली

4.12.5 आत्मकथात्मक शैली

4.12.6 पत्रात्मक शैली

निष्कर्ष

पंचम अध्याय - 'पाँच आँगनों वाला घर' में चित्रित समस्याएँ 100-127

प्रास्ताविक

5.1 समस्या क्या होती है?

5.2 समस्या इस शब्द का अर्थ

5.3 उपन्यास की समस्या

5.4 उपन्यास के कथानक की समस्या

5.5 पारिवारिक समस्या

5.5.1 'पाँच आँगनों वाला घर' की पारिवारिक समस्या के कारण

5.5.1.1 घर के प्रमुख व्यक्ति के कारण

5.5.1.2 देश को मिली स्वतंत्रता का परिणाम

5.5.1.3 बदलती परिस्थितियों के परिणाम

5.5.1.4 पाश्चात्यों के अंधानुकरण के कारण

5.5.1.5 संकुचित विचार स्वार्थ भावना

5.6 राजनीतिक समस्या

5.7 आर्थिक समस्या

5.8 मनोवैज्ञानिक समस्या

5.9 सामाजिक समस्या

5.9.1 बूढ़ेपन की समस्या

5.9.2 नारी समस्या

5.9.3 भ्रष्टाचार

5.9.4 जातीयता

5.9.5 व्यसनाधीनता

5.9.6 यौन समस्या

5.10 धार्मिक समस्या

निष्कर्ष

उपसंहार 128-138

संदर्भ ग्रंथ-सूची 139-141

परिशिष्ट 142-145

* * * *